जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(शुभारंभ : १५-८-१९६९) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७,सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४७ वे ❖ अंक ४ था ❖ डिसेंबर २०१५ ❖ वीर संवत २५४२ ❖ विक्रम संवत २०७२

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● महावीर गाथा	१५	● गोल्डन डायरी	८२
● गौतमालय गृह संकुल, पुणे – उद्घाटन	२७	● मेथी चिकित्सा	८५
● कव्हर तपशील	२८	● जीवन दृष्टी का झरोखा	८७
● चक्रव्यूह को तोडो	३१	● अपेक्षा तिरा भी दे... गिरा भी दे	८९
● महामंत्र की साधना	४१	● सुखी जीवन के तीन सूत्र	९०
● चाणक्याची समग्र जीवन कथा	४६	● आवो स्वागत करे – नववर्ष का	९१
● मौत का वॉरंट	५१	● स्पर्शाचे कौतुक आणि कौतुकाचे (अत:) रंग	९३
● जैन मन्दिरों को शिक्षा का केंद्र बनाइए	५३	● समझ जीने की	९५
● नववर्ष के नव संकल्प	५४	● Bank PO ट्रेडींग – JATF	९९
● क्रोध आबाद तो जीवन बरबाद	५५	● जितो पुणे चॅप्टर समारोह	१०४
● हास्य जागृति	६२	● जय जिनेंद्र सेवा संघ, पुणे	१०६
● स्वर्ग और नरक का यथार्थ	६३	● सयं ज्ञान प्रकाशन ट्रस्ट	१०६
● कैसे करे व्यक्तितत्व का विकास – बोलने की कला	७३	● श्री. श्रीपालजी ललवाणी – एकसष्ठी	१०७
● चला, उठा... जागे व्हा	८१	● श्री. अमृतलालजी मुथा – अमृत महोत्सव	१०८

- आनंदऋषिजी हॉस्पिटल, अहमदनगर १०९
- श्री. महेंद्र सुंदेचा मुथ्था, पुणे – ॲम्बुलन्स भेट १०९
- निरोप देताना, निरोप घेताना १११
- राष्ट्र का सुनहरा भविष्य – युवा शक्ती ११४
- कडवे प्रवचन ११६
- गंजण्यापेक्षा झिजलेलं बरं ! ११७
- आनंदधाम त्रिवेणी संगम ११८
- दि पूना मर्चन्टस् चेंबर, पुणे ११९
- खरतर गच्छ संमेलन, पालीताना १२०
- अविष्कार ग्रुप, पुणे १२१
- बायं तं न समायरे १२३
- जबकि १२४
- बोगस प्रचारक सावधान १२५
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन विशेषांकासहित

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –१५५० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – ९५० रु. ❖ वार्षिक वर्गणी – ३५० रु.

(बाहेरगावच्या चेकला १०० रु. जास्त) ❖ या अंकाची किंमत ३० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/on line / RTGS / AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

'जैन जागृति' – वर्गणी बँकेत भरू शकता

जैन जागृति मासिकाची वर्गणी रोखीने, मनीऑर्डरने, पुणे चेक, ॲट पार चेक, ड्राफ्टने पाठवावी किंवा **'भारतीय स्टेट बँक'** मध्ये जैन जागृति खात्यात वर्गणी भरू शकता. बँकेच्या पे स्लीपवर **'जैन जागृति'** लिहावे. बँकेचा तपशील पुढीलप्रमाणे

STATE BANK OF INDIA Branch - Market Yard, Pune.
Current A/c No. : 10521020146 IFS Code : SBIN0006117

आपण जर वर्गणी बँकेत भरली तर वर्गणी भरल्यानंतर पे स्लीपची झेरॉक्स बरोबर आपला ग्राहक क्रमांक, पूर्ण नाव, पत्ता, मोबाईल नंबर ऑफीस मध्ये पाठवावे अथवा बँकेची स्लीप स्कॅन करून E-mail : jainjagruti1969@gmail.com वर पाठवावी. ई–मेलमध्ये ग्राहक क्र., पूर्ण नाव, पत्ता, फोन, मोबाईल नंबर द्यावा म्हणजे आपल्या नावाने वर्गणी जमा केली जाईल.

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर

पंचवार्षिक	१५५०/– रु.	त्रिवार्षिक	९५०/– रु.	वार्षिक	३५०/– रु.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३, **मो. संजय:**९८२२०८६९९७ **सुनंदा:**९४२३५६२९९१ **www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५, ९९२२१११९६७
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- **सासवड, हडपसर, पुणे –** श्री. राजेश प्रदीपजी कुवाड, मो. ९०२८५६६९७२
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **मुंबई** खारघर – श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- **धनसोली, नवी मुंबई –** श्री. सुभाष केशरचंदजी गादिया, मो. ९१५८८८८६८५
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **बीड –** श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर –** श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **लासलगाव –** श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अंमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **कुर्डुवाडी, जि. सोलापूर–** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ९९६०००००२५
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

।। महावीर गाथा ।।

उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. *(क्रमशः)*

संगम का पन्ना

सौधर्म स्वर्ग में शकेन्द्र अपने सामानिक देवों की सभा में श्रमण वर्धमान की साधना की, उनकी एकाग्रता की प्रशंसा करता है, प्रशंसा ही नहीं करता अपनी श्रध्दा, भक्ति भी दर्शाता करता है, और... इसी में किसी संगम का जन्म हो जाता है । भक्ति के गीत सुनकर भक्त के मन में भक्ति का स्रोत बहता है और संगम के मन में शक्ति का स्रोत बहता है । सौधर्म केवल वन्दना करके नहीं रुकता; भरी सभा में अपने सामानिक देवों की परिषद में आत्मसंघ को कहता है – 'सुनो ! सुनो ! आज धरणीतल, पृथ्वी पर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में पेढालपुर के पोलास उद्यान में श्रमण वर्धमान ध्यानस्थ हैं । धन्य है प्रभु को । ऐसा ध्यान, ऐसा ध्यान कि दुनिया की कोई दुष्ट ताकत, उनके ध्यान को नहीं तोड सकती। ध्यान में विघ्न नहीं पहुँचा सकती । तुम भी उनकी स्तुति करके, उनका ध्यान करके धन्य हो जाओ ।

पहले ही दग्ध मन होने से क्षोभ आया हुआ है और इसमें फिर ये कहना कि एक नर का, एक मनुष्य का, एक पुरुष का ध्यान और उस ध्यान की प्रशंसा... संगम उठ खडा होता है । कहता है – 'देवेन्द्र ! तुम्हारे द्वारा की गई प्रशंसा को हम कैसे और क्यों मानें ? अरे! एक तो मनुष्य का औदारिक शरीर, उपर से वह मन का गुलाम, उसके तन की सीमा क्या है ? उसका तन, न दुख सह सकता है न सुख । किसी वैक्रिय शरीर की बात होती तो हम मान भी लेते । आखिर है तो हड्डी, मांस का शरीर ही ना । एक ठंडी हवा का झोंका आया तो कंपकंपा जाएगा और आप कहते हो कि कोई देवता, कोई दानव उसकी साधना को भंग नहीं कर सकता ? ये चला मैं... आपके शब्द असत्य करके रहूँगा । आपके शब्द झूठे सिध्द करके रहूँगा । एक पल में उसकी साधना खंडित करके रहूँगा और सौधर्म कुछ बोलें, उसको कुछ समझाएँ, उससे पहले तो संगम चल पडता है... ।

किस पल में क्या होता है ? कैसे संयोग मिलते हैं, कैसी परिस्थितियाँ मिलती हैं और ये नादान मन पता नहीं कहाँ, किसमें जाकर उलझ जाता है ? प्रभु की उपासना करने का एक सुनहरा अवसर मिला था वह भी संगम ने खो दिया ।

संगम पहुँचता है । प्रभु ध्यान में तल्लीन हैं । अपने वैक्रिय शरीर के बल पर वह कितनी बार तीर्थंकर की सेवा में पहुँचा होगा ? उनके जन्म कल्याणक में पहुँचा होगा, उनके दीक्षा कल्याणक में पहुँचा होगा ? लेकिन एक बार मन में असुया, ईर्ष्या जाग जाती है तो सारा जीवन व्यर्थ हो जाता है ।

परमाधमी क्या कष्ट देंगे ? भवनपति देव क्या कर्म बंध कर सकते हैं ? वे तो नारकियों को दुख देते हैं । नरक में जाकर दुख देते हैं ।

यह संगम, जिसमें दुख देने की भावना का जन्म होना भी आश्चर्य है क्योंकि ये भावना जन्मती है वाणव्यन्तर, भवनपति देवों में न कि वैमानिक देवों में । वाणव्यन्तर, भवनपतिदेव दुख देते हैं । वैमानिक देवों में किसी को दुख देने की भावना का जन्म होना और वो भी तीर्थंकर को, जो किसी का दुश्मन नहीं, उसको दुख देने की भावना का जन्म होना... न जाने इस संगम को कौन से मोह के थपेडों ने थपेडा था ?

बच जाना है इन थपेडों से । संगम की कथा इसीलिये सुनाई जा रही है । कभी न बनना संगम । कुछ भी बन जाना, संगम न बनना ।

जो तिरने का साधन होता है, उसके बल पर, उसके आधार पर जो डूबने की साधना करते हैं, वे सारे संगम है ।

झाँक लें स्वयं के मन में, झाँक लें स्वयं के जीवन में । कहीं ना कहीं संगम का ये बीज पडा हो तो उसे, वोसरे... वोसरे... वोसरे... कर दें । पडा होगा हमारी चेतना के किसी कोने में, इस संगम का बीज । हमारी चेतना के किसी कोने में यह संगम का बीज ना रहे अन्यथा जो कल्याण का साधन है, मंगल का साधन है, उत्थान का साधन है उसे यह बीज अमंगल और दंगल में बदल देगा । साधना को विराधना में बदल देगा । जीवन पथ अंधियारा कर देगा । यदि लगे कहीं, ये साधन था धर्म का, हमने अधर्म कर लिया । ये साधन था उत्थान का; हम पतन की ओर गये । वहीं-वहीं उसे वोसिरा देना । क्रोध को अहंकार को, मोह को, माया को, लोभ को, पहचानना आसान है लेकिन संगम को पहचानना मुश्किल है । ये देवत्व, दानत्व, पशुत्व, मनुष्य की अधमता, दुष्टता सबका संगम है । एक दिन में कोई संगम नहीं बनता । संगम का यह बीज तो मन के किसी कोने में सुषुप्तावस्था में पडा रहता है जो मौका मिलते ही जागृत हो जाता है । सौधर्म की वो भक्ति, संगम के अंदर पडे दुष्टता के बीज के लिये बारिश बन गई ।

सौधर्म की बात को सुना तो सभी ने था, देवताओं ने, रक्षपालों ने, सभी ने जो परिषद् में उपस्थित थे । संगम के मन में ही यह अंगारा क्यों जला ? उसके अंदर दुष्टता का कोयला जो पडा था, भभक गया । संगम चला...

रात का अंधियारा है । संगम पहुँचा । अपनी वैक्रिय शक्ति के बल पर तुफान चलाता है । ऐसा तुफान, ऐसा बवंडर, ऐसी रज, ऐसी रज कि प्रभु का मुँह, नासिका, सारे अंग, पूरा तन-बदन ही धूल से सन जाता है, धूमिल हो जाता है । वैक्रिय शरीर के स्पन्दनों के साथ रज प्रभु तक पहुँच रही है । हवा की गति से चलती उस तीखी रज के कारण साँस लेना भी मुश्किल हो गया प्रभु के लिये । लेकिन प्रभु तो ध्यान में तल्लीन हैं । जिस पुद्गल परमाणु पर दृष्टि लगा रखी थी, दृष्टि उसी पर रही । पलक झपकने की बात तो दूर नजर भी न हटी प्रभु की । 'एग पुग्गल दिट्ठी निक्खेवे' महाप्रतिमा की साधना में प्रभु लीन- तल्लीन हैं । संगम सोचता है कि ये बवंडर चला और वर्धमान धराशायी हो जायेंगे । मैं दूसरे ही पल, सौधर्म के पास जाकर उनको अपना वचन वापस लेने को कहूँगा । संगम ने देखा, प्रभु तो विचलित भी न हुए ?

संगम ने वज्रमुखी चींटियों को भेजा । नख-शिखांत काट रही हैं, रोएँ-रोएँ को काट रही हैं चींटियाँ लेकिन प्रभु की दृष्टि उसी पुद्गल पर रही ।

दुष्टता का पुतला संगम । एक रात में बीस उपसर्ग देता है, तीर्थंकर प्रभु को ।

देवत्व की शक्ति जब दानत्व, दुष्टता की शक्ति में बदल जाती है तो शूलपाणि भी शरमा जाता है ।

अरे ! परमाधामी देव भी नारकी जीवों को इतना कष्ट नहीं देते । वो तो वेदना देते हैं वैक्रिय शरीर वालों को । वैक्रिय शरीर वालों की सहन शक्ति अधिक होती है, औदारिक शरीर वालों से । संगम कष्ट दे रहा है औदारिक शरीर को ।

कहावत है 'हाथी को पसेरी की मार' । परमाधामी देवों द्वारा नारकी जीवों को दी गई वेदनाएँ, हाथी को पसेरी की मार है ।

'चींटी को पसेरी की मार' संगम द्वारा प्रभु को दी गई वेदनाएँ, चींटी को पसेरी की मार है ।

औदारिक शरीर, वज्रमुखी चींटियाँ काट रही हैं फिर भी प्रभु की दृष्टि चलित न हुई । इतनी वेदना पाकर

प्रभु के शरीर का एक स्पंदन नहीं बदला, मन का एक कंपन अन्यथा न हुआ । अब तो समझ जाना चाहिए था संगम को लेकिन जो समझ जाये, वो कैसा संगम ? नहीं समझता संगम ।

संगम बिच्छू छोडता है । बौछार बिच्छूओं की...! रग-रग में बिच्छू की नान्दियाँ । लेकिन प्रभु, प्रभु हैं और ये तन,

यै: शान्तराग-रुचिभि: परमाणुभिस्त्वं
निर्मापित स्त्रिभुवनैक-ललामभूत ।
तावन्त एवं खलु तेप्यणव: पृथिव्यां
यत्ते समान-मपरं न हि रुपमस्ति ।।

प्रभु ! आपके शरीर के निर्माण में, शान्ति के ये जो परमाणु जुडे हैं, उन शान्ति के परमाणुओं को, चाहे जितने अशांति के तूफान आ जाएँ, नहीं तोड सकते । हाँ, कोई डूब अवश्य सकता था उस शान्ति में । शान्ति के उस सागर में डूबकर सुधारस का पान, कोई करना चाहता, तो कर सकता था, आचार्य मानतुंग की तरह। संगम न कर सका । जो संगम होते हैं उन्हें प्रभु के शरीर का सौंदर्य नजर नहीं आता । उन्हें प्रभु में अमृत नजर नहीं आता । उन्हें तो केवल दिखता है प्रभु का, हड्डी-मज्जा से बना शरीर । उन्हें क्या पता कि ये तीर्थंकर का शरीर है, जिसमें करुणा रस भरा है, अमृत भरा है ? उस शरीर को बिच्छू तो क्या सर्प भी दंश कर लें तो कुछ नहीं होगा ।

बिच्छुओं के बाद सांप लिपटते जाते हैं प्रभु के शरीर से । एक के उपर दूसरा, दूसरे पर तीसरा सर्प लिपटता जाता है । शरीर का कोई हिस्सा सर्पदंश से वंचित न रह पाया । संगम का प्रभु को वेदना पहुँचाने का ये प्रयास भी निष्फल रहता है । प्रभु तो वैसे ही अविराम दृष्टि जमाये हुए हैं अपने लक्ष्य पर ।

अहंकार कब मानता है ? अहंकार कब सुनता है? अहंकार कब समझता है ? अहंकारी व्यक्ति ऐसे ही होते हैं ।

दो व्यक्ति, किसी के भी समझाने से नहीं समझते,

१. अहंकारी

२. भक्त, चाहे जितना समझा लो ।

अर्जुनमाली, प्रभु भक्त सुदर्शन को महावीर के पास पहुँचने से नहीं रोक सका । बेडियों में जकडा हुआ शरीर, आचार्य मानतुंग का, फिर भी वे देवता के पास नहीं पहुँचते, प्रभु ऋषभदेव के पास पहुँचते हैं, भावों से, जो सिध्द शिला पर विराजमान हैं और भय मुक्त रहकर वे प्रभु की भक्ति करते हैं, स्तुति करते हैं ।

दो ही रास्ते नासमझों के भी हैं । एक नासमझी सिध्दशिला पर पहुँचाती है तो दूसरी विनाश के कगार पर । दोनों ही नादानियाँ हैं । एक नादानी भगवत्ता को उपलब्ध कराती है, दूसरी मिट्टी में मिला देती है ।

संगम तो अहंकर का पुतला है, कैसे मानेगा ? अरे ! जिसने सौधर्म की बात नहीं मानी, उस समय में, जब अनुशासन का कल्प था । नायक कह दे, सत्ताधीश कह दे, प्रमुख कह दे, सेनापति कह दे और सेना का तो काम ही सेनापति कहे उसे स्वीकार कर लेना है, लेकिन अहंकार किसी की बात नहीं मानने देता । संगम के अहंकार ने भी उसे अपने नायक इन्द्र की बात नहीं मानने दी ।

कूट-कूट कर अंदर भरा यह अहंकार सारे वरदानों से हमें-तुम्हें वंचित रखता है ।

योगी अरविन्द से पूछा गया - साधना मार्ग पर आगे बढने में सबसे बडी बाधा क्या है ?

योगी ने कहा - 'साधना मार्ग पर सबसे बडी बाधा न क्रोध है, न मान है, न माया है, न लोभ है । अहंकार सबसे बडी बाधा है । यह इतना विचित्र रुपों में सामने आता है, यह इतना जटिल और कुटिल रुपों में सामने आता है कि पता ही नहीं चलता कि हम अहंकार कर रहे हैं ।'

गौशालक का भी अहंकार और संगम का भी अहंकार दोनों के अहंकार ने प्रभु श्रमण वर्धमान को कष्ट

दिये, लेकिन चाहे जितने अहंकार के गौशालक आ जाएँ, चाहे जितने अहंकार के संगम आ जाएँ, प्रभु के पास टिकते नहीं ।

नाग अपने फणों से प्रभु को दंश कर रहे हैं, फिर भी प्रभु अविचलित हैं, अट हैं । संगम के नाग भी प्रभु की ध्यानस्थता में खलल न डाल सके । नहीं मानता संगम । हाथियों को दौडाता है । हाथियों की उन्मत्त फौज चारों दिशाओं से आ रही है और हाथी... वर्धमान को सूंड में लपेट कर उपर उछाल रहे हैं, लेकिन प्रभु की नजर पुद्गल से नहीं हटती । हाथी, हथिनी आते हैं, सिंह आते हैं लेकिन प्रभु पर कोई असर नहीं हो रहा । सब व्यर्थ होता देख संगम पिशाच को भेजता है । वह भी प्रभु की महाप्रतिमा की साधना को नहीं डिगा सका ।

बाकी कायोत्सर्ग के समय में तो आँख बंद हो सकती है । महाप्रतिमा की साधना में एक पुद्गल परमाणु पर दृष्टि लगाए रखना होता है और नजर को वहाँ से हटने नहीं देना है । त्राटक योग की साधना । रात के अंधियारे में एक पुद्गल परमाणु पर दृष्टि लगाए रखना है । दो मिनट करें तो सिर में दर्द हो जाएगा, आँखों में आँसू आ जायेंगे । इन्द्रिय की दृष्टि है ये अवधिज्ञान की दृष्टि नहीं । प्रभु अवधिज्ञानी थे लेकिन यहाँ तो आँख से देख रहे हैं पुद्गल को, ज्ञान से नहीं । नजर नहीं हटनी है । निमित्त तो सारा चल रहा है । अवधि ज्ञान से जान रहे हैं प्रभु कि संगम आ रहा हैं, रज आ रही है, चींटियाँ, बिच्छू, हाथी आ रहे हैं । सब जान रहे हैं, महसूस नहीं कर रहे ।

देवता की माया इस प्रकार के चित्र, इस प्रकार के दृश्य, इस प्रकार की संवेदना के पुदगल प्रक्षेपित करती है । यदि कोई व्यक्ति गफलत में रह जाये तो उसकी अनुभूति में चले जाते हैं और यदि साधक सतर्क है तो इन्हीं दृश्यों को ऐसे देखता है जैसे रंगमंच पर कोई नाटक देख रहा है । जैसे कोई नृत्य देख रहा है । उसे कोई दुख-सुख की संवेदना, वेदना महसूस नहीं होती ।

तीर्थंकर तो बोध में जीते हैं, अनुभूति में नहीं ।

तीर्थंकर बोध में जीते हैं और इसी बोध में जीने को कहते हैं -

'अबोहिं परियाणामी बोहिं उवस्सं पवज्जामि । अबोधि को छोडकर बोध की शरण में आ जाओ । अर्हम् की साधना बोधि की साधना है, वेदना की साधना नहीं ।

श्रमण कभी वेदना नहीं सहते । कभी क्लेश की अनुभूति नहीं करते श्रमण । वे तो केवल करते हैं - क्लेश में बोध, वेदना में बोध ।

वेदना भुगते वो नारकी, वेदना भुगते वो त्रस । साधक न नारकी होता है न त्रस । साधक तो इन दोनों को पार करके आगे बढता है ।

देखा संगम ने, मैंने इतने कष्ट दिये फिर भी कुछ नहीं हो रहा ? शायद इन्होंने दुखों को, कष्टों को जीत लिया होगा । कष्टों को, दुखों को जीतना आसान है । सुख को जीतना कठिन है । साधना के बल पर शायद दुखों को जीत लिया होगा, सुख को तो नहीं जीता होगा? अपना गणित चलाते हैं हम । हम हमेशा अपनी तराजू में तोलते हैं दूसरों को । हमारी तराजू में तो पता नहीं कितना मोह, कितना लोभ, कितना लालच, कितनी माया, कितने अहंकार का भार पडा हुआ है और उसी के आधार पर जब हम दूसरों को तौलते हैं तो लगता है कि आदमी गलत है और हमारी तराजू सही है । हम अपनी तराजू को कभी गलत नहीं कहते ।

पूज्य आचार्य आनन्द ऋषिजी म.सा. फरमाते थे - 'दूसरों के प्रमाणपत्र पर कभी स्वयं को प्रामाणिक मत समझना और दूसरों के निन्दा प्रस्ताव पर स्वयं को कभी निंदा का पात्र मत समझना ।' आयतुला यानि स्वतुला, आत्मतुला, आत्मतराजू होना चाहिये हमारे पास जिससे हम ईमानदारी से स्वयं को तोल सकें और अवश्य तोलें। जो स्वयं की तराजू पर चलते हैं, वे ही सिध्दि प्राप्त करते हैं ।'

संगम प्रतिकूल उपसर्ग देता ही जा रहा है लेकिन जब देखता है कि दुख देकर भी श्रमण को विचलित नहीं कर पा रहा हूँ, तो चलता है सुख की माया ।

संगम जानता है कि प्रभु को अपने माता-पिता के प्रति गहरा लगाव था । ले आता है संगम, सिध्दार्थ एवं त्रिशला को । माता-पिता विलाप करने लगते हैं । वर्धमान ! तूने ये क्या कर लिया ? अपनी काया को इतना क्यों सुखा लिया ? पुत्र ! हम वृध्द हो चुके हैं, तुम्हें तो हमारी सेवा करनी होगी । अफसोस ! प्रभु की दृष्टि तो हटती ही नहीं उस पुद्‌गल परमाणु से । प्रभु को तो पता था कि उनके माता-पिता स्वर्ग में हैं । उन्होंने स्वयं माता-पिता को संलेखना करवाई थी । संगम का यह तीर भी चूक गया । प्रभु पर कोई असर न हुआ ।

संगम ने सोचा, यहाँ भी मेरी माया, कम पड गई। अहंकार में व्यक्ति तीर चलाते-चलाते कुछ तुक्के भी छोड देता है, ऐसे में कभी-कभी तीर गलत साबित होने लगते हैं ।

देव दानव बन गया था । सौधर्म, महेंद्र का समकक्ष संगम, प्रभु की प्रशंसा सहन न कर सका था । प्रभु को ध्यान, साधना से खंडित करने के लिये एक ही रात में बीस उपसर्ग देता है । संगम की अधमता शूलपाणि के चण्डकौशिक के समकक्ष कहीं भी नहीं है, उनसे आगे ही है संगम ।

चण्डकौशिक का जहरीलापन किसी कारण से था। संगम की उद्दण्डता बिना प्रयोजन के थी । उसका रस किसी की शान्ति भंग करने में ही था । उपसर्गों के सामने श्रमण झुके नहीं । संगम ने सोचा शायद श्रमण ने भय पर भी विजय प्राप्त कर ली है ।

इस बार संगम ने मोहक वातावरण के साथ मादक रुप धरकर, अपना उपसर्ग पेश किया । देवियों, अप्सराओं को रुप बनाकर प्रभु के सामने उपस्थित होता है, संगम। वे देवियाँ, अप्सराएँ प्रभु से कहती हैं - 'आप तो करुणा के अवतार हैं । वीतराग हैं । न किसी के प्रति द्वेष है आपका और न ही किसी के प्रति राग । हमारा दुख है, हमारी वांछा है काम-भोग । आप बिना राग के भोग लें तो आपको दोष नहीं लगेगा । भोग का दोष तो लगता ही इसलिये है कि मन में आसक्ति है । आप वीतराग हैं तो आपको भोग से भय क्यों ? जब आपके मन में भोग है ही नहीं फिर आप जीवन से क्यों भागते हैं ? वे अप्सराएँ, वे देवियाँ प्रभु के चारों ओर एकत्रित होकर अपनी भाव-भंगिमाओं से उन्हें आकर्षित करने की कोशिश करती हैं । उन्हें रिझाती हैं, उन्हें सहलाती हैं, उत्तेजित करने का प्रयास करती हैं । लेकिन श्रमण तो श्रमण हैं । प्रभु पर इन सब स्पंदनों का कोई प्रभाव नहीं पडता । मानों प्रस्तर की प्रतिमा हो । संगम को लगता है, ये श्रमण साधना की राह पर काफी आगे बढे हुए हैं। इनका उद्देश्य क्या है ? यदि मैं इन्हें इनका उद्देश्य प्राप्त कराने का प्रयास करु दूँ तो शायद सफलता मेरे हाथ लग जाये ?

एक देव विमान आकर खडा हो जाता है । वरदान देने के लिये । राजपुत्र वर्धमान ! तुम्हें ग्यारह वर्ष हो गये हैं, तप करते-करते । मैं तुम्हें सिध्दि का वरदान देने को तैयार हूँ । आज माँग लो, जो तुम्हें माँगना है । प्रभु की पलक झपकती ही नहीं । नजर भी नहीं हटती । जिस पुद्‌गल परमाणु पर प्रभु ने दृष्टि लगा रखी थी, रात के अंधियारे में भी वह दृष्टि निरंतर बनी हुई है । देव विमान चला गया ।

संगम ने विकराल उपसर्ग दिये, उत्कट भाव से दिये ।

मनुष्य का मन ऐसा ही होता है । बडे-बडे सागर तो तैरकर पार कर जाता है लेकिन नाले में गोते लगाता है । बडी-बडी परीक्षाएँ तो पार कर लेता है लेकिन छोटी सी परीक्षा में असफल हो जाता है, अटक जाता है, फेल हो जाता है ।

कोई रास्ता जब बाकी नहीं तब संगम एक दोटा सा उपसर्ग देता है । एक शिकारी का रुप धारण कर,

उसका वेश बनाकर पहुँचता है प्रभु के पास । एक नहीं कई पिंजरों में पक्षी हैं । सारे पिंजरे प्रभु के तन पर लगा देता है । पंछी नोचते हैं प्रभु को, अपनी चोंच से । प्रभु के सारे अवयवों को नोच लेते हैं पक्षी । घाव हो जाते हैं प्रभु के शरीर पर और उनसे रक्त बहने लगता है । प्रभु जरा भी विचलित नहीं होते अपनी साधना से ।

संगम का आखिरी प्रयोग–रात का अंधियारा छट रहा है । ठण्ड का समय है और एक सार्थवाह, एक प्रवासी उपस्थित होता है । उसके हाथ में हांडी है । उसे खीर पकानी है । कहीं पत्थर नहीं मिल रहा जिस पर रखकर वह खीर पका सके । वह प्रभु के दोनों पैरों के बीच आग जलाकर पैरों पर हांडी रख देता है, खीर पकाने के लिये । प्रभु न तो उस आग से झुलसते हैं और न विचलित होते हैं । प्रभु निष्कंप हैं । किसी भी प्रकार के भय से प्रभु भयभीत न हुए ।

प्रभु तो एक को जीत लेते हैं, सब जीत जाते हैं। प्रभु तो आत्मजीत बने हुए थे । सुबह होती है, प्रभु उतने ही प्रफुल्लित हैं, उतने ही तरोताजा हैं ।

सभी रुपों में संगम फेल हो गया । अब सोचता है संगम कि ध्यान का संकल्प तो खंडित न कर सका, साधना अवश्य ही भंग करके रहूँगा ।

दुष्टता जब अहंकार के वशीभूत हो जाती है, हार कर भी हारना नहीं जानती ।

कहानी चलती है – एक कौआ आकाश में उड रहा था । एक चील भी उड रही थी । कौए ने चील को न्यौता दिया । स्पर्धा रखते हैं । कौन अधिक देर तक रह सकता है आकाश में ? चील ने कहा – 'क्यों ऐसा करें? तू क्यों अपनी जान देना चाहता है ?' नहीं नहीं हमारे में भी बहुत सामर्थ्य है, कौआ ने कहा । जाने दो, चील ने कहा । नहीं, नहीं... चलो ! उडना शुरु करते हैं । दोनों उडने लगे । चील तो बहुत आराम से तैरती रही आकाश में । कौआ बहुत जोर लगाने लगा । बहुत ताकत लगायी लेकिन नीचे ही नीचे जाने लगा । उसके प्राण निकलने लगे । कौआ पलक झपकते ही नीचे गिर गया । चील को दया आ गयी । उसने सोचा, कौआ कहीं पानी में न गिर जाये, वह उसे बचाने नीचे उतरने लगी । कौआ हार मानने को तैयार नहीं । कहने लगा– 'देखें, पहले कौन नीचे जा सकता है ?' अब, अब नीचे जाने की स्पर्धा है । हार कुबूल नहीं करता कौआ।

ये कौआ, ये दुष्टता हार नहीं मानता । ये संगम हार नहीं मानता । जिनके सामने हार मानना भी सौभाग्य हो सकता था संगम की दुष्टता ने जीत जाने का भ्रम पालकर दुर्भाग्य को बुलावा दे दिया था ।

एक पल में निर्माण नहीं होता संगम का । न जाने कितने जन्म–जन्मांतर से, भव भवान्तर से पडा होगा ये दुष्टता का बीज संगम के अंदर । संगम के बीज की पहचान क्या है ?

– जिनके सहारे तिरा जा सकता है, उनसे डूबने का काम ले वो संगम है ।

– जहाँ पुण्य किया जा सकता है वहाँ पाप कमाये वो संगम है ।

– जहाँ शुभ किया जा सकता है वहाँ अशुभ करे वो संगम है ।

ये मनुष्य का जन्म मिला है, ये तिरने का साधन मिला है, ये साहिल मिला है, इस पर हम डूबे या तिरे? सोचना हमें है । सुन रहे हैं आप, मन–वचन–काया के बल की महिमा । ये सब तिरने के साधन हैं और यदि हम इनसे डूबने का काम लेते हैं तो निश्चित रुप से हमारे अंदर संगम बैठा है ।

संगम प्रभु का ध्यान खंडित नहीं कर पाया । चौबीस घंटे बीत गये । अब वह इस धरती पर एक पल भी नहीं रह सकता । देवगण जब तीर्थंकरों के च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, निर्वाण कल्याणक पर पृथ्वी पर आते हैं तो कुछ पलों में ही लौट जाते हैं । चौबीस घंटे भी नहीं रह पाते हैं धरती पर । देवलोक छोडना इतना आसान भी नहीं है । लेकिन संगम जैसा कोई जब अपनी दुष्टता पर उतर आता है तो छह महीने पृथ्वी पर रह जाता है । ये कोई मजबूरी नहीं थी संगम की, न ही

कहीं से उसको कोई आमंत्रण मिला था स्वर्ग से नीचे आने का । लेकिन पाप का कोई उदय था शायद कि संगम अब प्रभु की साधना खंडित करने चला...

प्रभु को, कहीं भी आहार न मिले, यह प्रयास संगम करता है और सफल भी होता है । मछली बनकर, फूल बनकर, संगम, आहार-पानी की प्रासुकता समाप्त कर देता है । ऐषणीय को अनेषणीय बना देता है । संघट्ठा कर देता है, अप्रासुक सचित कर देता है वह अन्न को, जल को । ऐसी बाधाएँ छह महिने तक संगम खडी करता रहता है ताकि प्रभु को आहार न मिल सके । देवता जब दानव के रुप में आ जाता है तो आहार ही नहीं, पानी भी नहीं मिलता प्रभु को छह महिने तक ।

अनार्य प्रान्तों में भी ऐसा न हुआ कि प्रभु को आहार न मिला हो ।

प्रभु ऋषभदेव को तो लोगों की अज्ञानता के कारण आहार नहीं मिला था ।

संगम की नादानी देखो ! कितने भक्त तडपे होंगे प्रभु को अपने द्वार से खाली हाथ लौटते हुए ? आहार तैयार है लेकिन अप्रासुक हो गया, असूझता हो गया और प्रभु लौट गये । दाता का मन तडप उठता । उसने तो आहार सूझता ही रखा था, प्रासुक ही रखा था, कैसे असूझता हो गया, कैसे अप्रासुक हो गया, कैसे दूषित हो गया ? लेकिन प्रभु, प्रभु तो मस्ती में हैं, आनन्द में हैं, शुभ भावों में हैं । संगम जान रहा था कि प्रभु का मन तो मजबूत है लेकिन तन तो मनुष्य का ही है ना ? मन को तो जीत लिया है प्रभु ने किन्तु इस शरीर, इस हड्डी-मज्जा से बने तन को तो तोडा ही जा सकता है । चौबीस तीर्थंकरों में यह श्रमण महावीर का ही पन्ना है जहाँ प्रभु को आहार नहीं मिलता, पानी नहीं मिलता । प्रभु ने कोई तपस्या न की थी । वे जाते अवश्य थे आहार के लिये लेकिन आहार मिलता नहीं था । प्रभु जानते थे कि यह संगम की देव माया है । आहार असूझता, अप्रासुक नहीं होता था, कर दिया जाता था लेकिन मर्यादा थी, प्रभु ले नहीं सकते थे उस आहार को।

तोसली गाँव में प्रभु ध्यानस्थ खडे थे उद्यान में । संगम एक इन्सान के शरीर में प्रविष्ट हो जाता है । चोरी करता है और औजार प्रभु के पास रख देता है । लोग देखते हैं और पूछते हैं - 'क्यों किया तुमने ऐसा ?' संगम कहता है - 'मेरे गुरु ने जैसा कहा, मैंने किया ।' याद रखें -

'जैसा दिखता है वैसा होता नहीं । जो दिखता है वह पूर्ण सत्य नहीं होता । बहुत कुछ अनदेखा रह जाता है । उस अनदेखे को न देख पाने के कारण कई बार उसकी सोच बदल जाती है । मनुष्य सतही देखता है, बहुत उपर से देखता है । थोडा सुनता है । एक शब्द सुन लिया और अपने भाव उसमें डाल देता है । एक रुप, एक क्रिया देख ली और अपने मन का सारा संसार उसमें डाल देता है ।'

एक प्रसंग है -

साधु विहार कर रहे थे । रास्ते में एक नदी आई जो सूख गई थी । वे साधु वहाँ बैठकर पानी पी रहे थे। कुछ गाँववाले जो उस ओर से आ रहे थे, उनसे, श्रावकों ने पूछा - 'क्या आपने हमारे गुरु महाराज को देखा?' गाँववालों ने कहा - 'हाँ देखा ।' क्या कर रहे थे ? नदी में पानी पी रहे थे । श्रावक आपस में कहने लगे, चलो घर, साधुजी का क्या ? नदी का पानी पीते हैं । अचित्, सचित का ध्यान नहीं रखते । साधु गाँव में पहुँचते हैं । कोई श्रावक उपस्थित नहीं है । उन्होंने श्रावकों को बुलाया और आने पर पूछा - 'क्या हुआ ? कोई नहीं है यहाँ ? सभी लोग कुछ तिरछी नजर से देख रहे हैं ।' श्रावक कहने लगे - 'हमने सुना कि आप रास्ते में नदी का पानी पी रहे थे और यह सुनकर सब घर लौट गये।' साधुओं को बात समझ में आ गई । कुछ गलतफहमी हुई है श्रावकों को । साधुओं ने कहा - 'नदी तो सूखी पडी है और पानी तो हमारे पास था, वही पी रहे थे । हमारे पात्र में पी रहे थे । इसमें दोष क्या

है ?'

यही तोसली ग्राम, लोगों ने सोचा नहीं, देखा नहीं, प्रभु ने कोई स्पष्टीकरण दिया नहीं । प्रभु स्पष्टीकरण देते तो उपसर्ग आते ही नहीं ।

जो राही होते हैं मंजिल के, वे कभी ठोकर का स्पष्टीकरण नहीं देते । राह में जो रोडा पडा है उसी को सीढी बना लेते हैं । तीर्थंकर, रास्ते में पडे, रास्ते में आये रोडे को हटाते नहीं, उसे आगे बढने की सीढी बना लेते हैं ।

गाँववासियों ने प्रभु को पकडा, मारा-पीटा लेकिन प्रभु चुप रहे । चार महिने से पेट में कुछ गया नहीं है । यह गुप्तचर हो सकता है ? नहीं बोलता... तो लटका दो इसे फाँसी के फंदे पर । आदेश हो गया और उपर से ये मार ? संगम को लगा, अब तो ये तन ठिकाने लगेगा। अब तो प्रभु बोलेंगे, अब तो प्रभु कहेंगे कि मैंने चोरी की है । प्रभु कुछ नहीं कहते । उन्हें पकडकर, राजपुरुष के पास ले जाया जाता है । राजपुरुष पूछते हैं, कौन हो तुम ? प्रभु चुप... कोई भी हो सकता है । फाँसी का आदेश होता है आदेश की पालना होती है । प्रभु को फाँसी के तख्ते तक ले जाया जाता है । फाँसी का फंदा गले में डाल दिया जाता है लेकिन जैसे ही नीचे से तख्ता हटाया जाता है, रस्सा टूट जाता है एक बार नहीं, दो बार नहीं, पूरे सात बार ऐसा होता है । कितनी बार फाँसी के फंदे पर झूले श्रमण वर्धमान ? सात बार। साधना के ग्यारहवें साल में प्रभु श्रमण वर्धमान के साथ ये घटना घटी ।

देखो ! ये संगम का उपसर्ग... । ये केवल कष्ट दे ही नहीं रहा, दूसरों से भी कष्ट दिलवा रहा है । ये करता भी है, कराता भी है और करने की व्यवस्था भी करता है । तीन करण तीन योग से । शूलपाणि तो एक करण तीन योग से कष्ट दे रहा था । चण्डकौशिक क्रोध में कष्ट दे रहा था लेकिन संगम तो स्वयं कष्ट देता है, दूसरों से दिलाता है और प्रभु को कष्ट मिल जाये उसकी भी व्यवस्था करता है मन, वचन, काया से । गजब ! क्या कहें ? प्रभु तो मेरु के समान निष्कंप । असिधारा पथ पर चलने वाले प्रभु पर कोई असर नहीं है ।

घबरा गया जल्लाद । एक बार, दो बार नहीं, पूरे सात बार टूटता है फाँसी का फंदा । जल्लाद सोचता है, कोई देवपुरुष है क्या ? वह राजपुरुष के पास जाकर घटना बयान करता है । क्षत्रिय राजपुरुष आता है । प्रभु के चरणों में प्रणाम करता है । अपराध की क्षमा माँगता है ।

न जाने कितने उपसर्ग देता है संगम छह महिने में? एक रात छूटी नहीं, एक दिन छूटा नहीं । उपसर्ग पर उपसर्ग देता ही चला गया संगम ।

एक बार लिये हुए संकल्प में, नियम में भी हम आगार, छूट रख लेते हैं । प्रभु ने साढे बारह वर्ष की साधना में कहीं कोई आगार न रखा, कोई छूट न रखी। ध्यान, साधना बडी ही दृढता से पूर्ण की प्रभु ने ।

एक छोटा सा संकल्प, छोटा सा नियम भी यदि आस्था, श्रध्दा, शक्ति के साथ संपन्न किया जाये तो यही शक्ति जीवन का वरदान बन जाती है ।

मैदान पर पहुँचने से पहले ही पलायन के रास्ते देखा करते हैं उन्हें कभी मंजिल पर पहुँचने के रास्ते नहीं मिला करते ।

छह महिने तक उपसर्ग देने के बाद आखिर हार मान लेता है संगम कि नहीं, अब नहीं । अब मैं कुछ नहीं कर सकता । देवता का सामर्थ्य भी चुक जाता है, वर्धमान महावीर के चरणों में । देवता धन्य हो जाते यदि चढाते तीर्थंकर के चरणों में भक्ति के पुष्प, लेकिन संगम तो दुष्टता के कांटे चढाता है और कांटे चढाने का सामर्थ्य भी जब चुक जाता है, तब संगम कहता है 'धन्य हैं आप, प्रभो ! जैसा सौधर्म ने, इन्द्र ने कहा था वैसे ही आप हो प्रभो ! मैंनें सोचा था ये मिट्टी का तन है इसको पतित करने में कितनी देर लगती है लेकिन तन ही केवल मिट्टी का था, चेतना मिट्टी की नहीं थी ।'

तन तो हर किसी का मिट्टी का होता है, चेतना

जब परमात्मा की होती है तो ये मिट्टी का तन भी मंदिर बन जाता है । और कुछ नहीं महावीर की गाथा बस इतनी ही है कि तन का एक-एक रोआँ मंदिर बन जाता है । जिस तन का रोआँ-रोआँ मंदिर बन जाता है - वह कल्याण मंदिर हो जाता है और फिर कितने भी संगम आ जाएँ कुछ नहीं कर सकते, कुछ नहीं बिगाड सकते प्रभु का ।

सिध्दसेन दिवाकर के शब्द बार-बार याद आते हैं-

कल्याण मन्दिरमुदारमवद्य-भेदि,
भीताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रि-पद्मम् ।
संसार-सागर-निमज्जदशेष-जन्तु
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ।

सारे भक्तों ने प्रभु को कल्याण की मूर्ति कहा । सिध्दसेन दिवाकर ने कहा - 'प्रभु आप तो कल्याण की मूर्ति नहीं आप तो कल्याण मन्दिर हो ।' आपके शरीर का तो रोआँ-रोआँ मन्दिर है ।

संगम आकर कहता है - 'प्रभो ! अब आप गोचरी के लिये, आहार के लिये पधारें । मैं अब कोई बाधा उपस्थित नहीं करुँगा । अब आपको आहार मिल जायेगा ।' यह कहकर संगम लौटने लगता है । लौटते हुए संगम को देखकर प्रभु की आँखों में आँसू आ जाते हैं ।

यह एक अनूठा पन्ना है, प्रभु के पूरे साधना काल का । पूरे साढे बारह वर्ष के साधना काल में प्रभु की आँखों में आँसू न आये लेकिन संगम को लेकर प्रभु की आँखों में आँसू आ जाते हैं । प्रभु की आँखों में आँसू तब नहीं आते जब वो प्रभु को कष्ट दे रहा था । प्रभु की आँखों में आँसू आते हैं, जब वो विदा हो रहा था, जब उसने कह दिया था कि मैं हार चुका हूँ और संगम का मन देखो, कितना कुटिल ! सोच रहा है कि अब हार गये प्रभु । अब आये आँखों में आँसू । देखो ! करुणा के आँसुओं को भी रुदन के आँसू समझ लेता है । जो करुणा के आँसू को भी रुदन के आँसू समझ ले वह और कोई नहीं संगम होता है । तब प्रभु कहते है - 'संगम ! तू चाहे जितना उपद्रव दे दे, दुख दे दे, कष्ट दे दे, तेरा कोई कष्ट, कोई उपद्रव मुझ तक न पहुँचेगा । ये आँसू तेरे दिये कष्ट के कारण नहीं, ये आँसूं तो इसलिए हैं कि मैंने चाहा था, मेरा तन ऐसा हो, मेरी साँस ऐसी हो, मेरी भावना ऐसी हो, मेरा हर वचन ऐसा हो जिससे मैं जगत के हर प्राणी को दुख से मुक्त कर दूँ । मेरा आलम्बन पाकर, जगती के जीव, इस संसार सागर से तिर जायें । इसके लिए नंदन राजकुमार के भव में मैंने ग्यारह लाख साठ हजार मासखमण की तपस्या की, तीर्थंकर गौत्र बांधने के लिये। ऐसे इस तन को मैंने तपस्या से साधा, इस जीवन को मैंने तपस्या से साधा कि जगतीतल के जीवों के, इस संसार सागर से तैरने के लिये, नौका बन जाये मेरा तन। इस तन का आलम्बन लेकर तूने जो कर्म बाँधे हैं, उनको भुगतते समय, जो वेदना तुझे होगी, उसी वेदना को दृश्य कर मेरी आँखों में आँसू आ गये । तेरे दिये कष्ट के कारण से नहीं ।

कैसी करुणा तीर्थंकर की ? अनन्त करुणा । अंधियारे में न भटक जाएँ, इसलिये हमें निर्ग्रन्थ धर्म दिया । जिनवाणी दी । सन्देश दिया कि सुनो ! तिर जाओ इस संसार से ।

धन्य हैं प्रभु, जो अपने को कष्ट देने वाले संगम का भी आँसुओं से अभिषेक करते हैं । प्रभु के अभिषेक के आँसुओं से सिंचित संगम चला जाता है । संगम देवलोक से निष्कासित होता है ।

छह महीने बाद प्रभु गोकुल में एक वत्सपालिका ग्वालन के घर पारणा लेने, गोचरी के लिये पधारते हैं। ग्वालन भक्तिभाव से आहार बहराती है । छह मासिक तपस्या का पारणा होता है । देवता पंचदिव्य की वर्षा करते हैं और प्रभु की जय-जयकार करते हैं ।

(क्रमशः) ●

गौतमालय गृह संकुल, पुणे – समाज समर्पण, ३ जानेवारी २०१६

उपाध्याय प्रवर प.पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. यांच्या प्रेरणेने स्थापन झालेल्या गौतमालयाच्या माध्यमातून वडगाव शेरी, पुणे येथे साधर्मिक बांधवासाठी बांधण्यात आलेल्या ३० फ्लॅटचे काम पूर्ण झाले आहे. रविवार दि. ३ जानेवारी २०१६ रोजी उपाध्याय प्रवर श्री प्रवीणऋषीजी म.सा. ठाणा ५ व सुमारे ५० ते ६० साधू-साध्वींच्या उपस्थितीत या प्रकल्पाचा समाज समर्पण सोहळा आयोजित करण्यात आला आहे. या अनोख्या सोहळ्यास आपण सहपरिवार उपस्थित रहावे.

उपाध्याय प्रवर प.पू. श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. यांच्या प्रेरणेने पुणे शहरात सुमारे ७ वर्षापूर्वी गौतमनिधीची स्थापना करण्यात आली. गौतमनिधीच्या माध्यमातून सुमारे रु. ७ ते ८ कोटीहून जास्त निधी संकलित करुन सेवा, शिक्षा, विकास या कार्यासाठी साधर्मिक बांधवाना देण्यात आला. गौतमनिधीच्या सहकार्याने शेकडो विद्यार्थ्यांना उच्च शिक्षण प्राप्त करता आले. शेकडो परिवाराचा मेडिक्लेम करण्यात आला. बऱ्याच बांधवांना वैद्यकिय व व्यावसायिक सहाय्य मिळाले.

गौतमालयाच्या माध्यमातून वडगाव शेरी, अरिहंत प्रतिष्ठान जवळ, पुणे येथे ३० फ्लॅट बांधण्यात आले आहेत. ५ मजली बिल्डींगला लिफ्ट, पार्किंग इ. सर्व सोयी आहेत. प्रत्येक फ्लॅटमध्ये हॉल, किचन, गॅलरी, संडास, बाथरुम सुमारे ३७५ स्क्वे. फूटचा फ्लॅट बांधण्यात आला आहे. सदर फ्लॅट समाजातील गरजू साधर्मिक बांधवाना ३/५ वर्षासाठी लिव्ह ॲण्ड लायसन्स (Leave and License) बेसीसवर अल्पशा मोबदल्यात देण्यात येणार आहेत. तसेच या गृह प्रकल्पात राहाणाऱ्या सर्व परिवारांना दत्तक घेण्याचा संस्थेचा मानस आहे.

३ जानेवारी रोजी गौतमालय समाज समर्पण सोहळ्यात साधर्मिक बांधवाना फ्लॅटचे वितरण करण्यात येणार आहे. तरी गरजू साधर्मिक बांधवानी सर्व माहितीसह लेखी अर्ज खालील पत्त्यावर पाठवा.

- **संस्थेकडे अर्ज दिल्यानंतर संस्थेच्या ऑफीसमधून फॉर्म घेवून सर्व माहिती भरुन तो फॉर्म संस्थेच्या ऑफिसमध्ये द्यायचा आहे.**
- **फ्लॅटच्या अर्जासोबत गौतमालय कार्यकारिणी सदस्य, गौतमालय दानदाता व साधू-साध्वींची शिफारस पत्र जोडू नये. शिफारस जोडल्यास अर्जाचा विचार करण्यात येणार नाही.**
- **पुणे शहर व पुणे जिल्ह्यातील परिसरातील साधर्मिक बांधवांसाठी हे फ्लॅट देण्यात येणार आहेत.**
- **आपल्या माहितीतील गरजू साधर्मिक बांधव यांना गौतमालय गृह संकुलाची माहिती द्यावी म्हणजे त्यांनाही संस्थेकडे अर्ज करता येईल.**

संपर्क : गौतमालय असोसिएशन, ७ दुग्गल प्लाझा, प्रेमनगर, बिबवेवाडी, पुणे – ४११०३७.
मो. : ९८५०७१४१६४

समाजाची आवड, समाजाची निवड
जैन जागृति

कव्हर तपशील - डिसेंबर २०१५

❖ **गौतमालय गृह संकुल, पुणे**

उपाध्याय प्रवर प. पू. श्री प्रवीणऋषिजी म. सा. यांच्या प्रेरणेने स्थापन झालेल्या गौतमालयाच्या माध्यमातून वडगाव शेरी, पुणे येथे साधर्मिक बांधवासाठी बांधण्यात आलेल्या ३० फ्लॅटचे काम पूर्ण झाले आहे. रविवार दि. ३ जानेवारी २०१६ रोजी उपाध्याय प्रवर श्री. प्रवीणऋषिजी म. सा. ठाणा ५ व सुमारे ५० ते ६० साधू-साध्वींच्या उपस्थितीत या प्रकल्पाचा समाज समर्पण सोहळा आयोजित करण्यात आला आहे.

❖ **आनंदऋषिजी हॉस्पिटल-अहमदनगर**

आनंदऋषिजी हॉस्पिटल मध्ये रमेशजी फिरोदिया एज्युकेशन ट्रस्ट यांच्या वतीने आयोजित मोफत कॅन्सर तपासणी व सवलतीच्या दरात उपचार व शस्त्रक्रिया शिबीराचे उद्घाटन उपाध्याय रविंद्रमुनिजी म. सा. यांनी मंगल संदेश देऊन केले. याप्रसंगी वैभवमुनिजी, संयोजक रमेश फिरोदिया, सौ. सविताताई फिरोदिया, आशाताई मुनोत, डॉ. प्रकाश कांकरिया, निखिलेंद्र लोढा, प्रेमराज बोथरा, संतोष बोथरा, प्रकाश छल्लानी, सतीश लोढा, सुभाष मुनोत, अभय गुगळे आदि मान्यवर उपस्थित होते.

❖ **श्री. सुभाषचंद्रजी रूणवाल, मुंबई**

भारत जैन महामंडळ, मुंबई यांनी उद्योगपती व बिल्डर श्री. सुभाषचंद्रजी रूणवाल यांचा सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक इ. क्षेत्रात केलेल्या बहुमोल कार्यासाठी 'जैन समाज रत्न' पुरस्कार देवून गौरव करण्यात आला. न्यायमुर्ति श्री. के. के. ताथेड यांच्या हस्ते पुरस्कार देण्यात आला. सोबत सौ. चंदा रूणवाल इ. मान्यवर

❖ **श्री. पारसजी मोदी, मुंबई**

मुंबई येथील युवा कार्यकर्ते, समाजसेवी व अनेक संस्थेत कार्यरत, उद्योगपती श्री. पारसजी मोदी यांना जिनेन्द्र की आवाज द्वारा नाशिक येथे 'जिनेन्द्र आनंद रत्न' पुरस्कार देवून सन्मानीत करण्यात आले. श्री. डि. सी. जैन, श्री. संतोषमामा, श्री. मोहनशेठ चोपडा यांच्या हस्ते पुरस्कार स्विकारताना श्री. पारसजी मोदी

❖ **जितो पुणे ऑफिस उद्घाटन**

ओसवाल बंधू समाज, पुणे येथे जितो पुणे चाप्टरचे सुमारे ४००० स्क्वेवर फुटाचे भव्य ऑफीसचे उद्घाटन श्री. रसिकलालजी व सौ. शोभाताई धारिवाल यांच्या हस्ते ३१ ऑक्टोबर रोजी संपन्न झाले. यावेळी सोबत श्री. तेजराजजी गोलेच्छा, श्री. राकेशजी मेहता, श्री. विजयकांतजी कोठारी, श्री. राजेशजी सांकला, चेअरमन श्री. विजयजी भंडारी इ. मान्यवर.

❖ **अविष्कार ग्रुप, पुणे**

पुणे येथील अविष्कार ग्रुप तर्फे गुलटेकडी, मार्केटयार्ड मधील पिनकोड ४११०३७ मधील स्थानकवासी जैन समाजाची निर्देशिका (डिरेक्टरी) प्रकाशित करण्यात आली. श्री आदिनाथ स्थानकवासी जैन भवन ट्रस्ट च्या प्रांगणामध्ये दिवाळीतील पाडव्याच्या महामांगलीकच्या शुभमुहुर्तावर सरलात्मा प. पू. श्री. पारसमुनिजी सर्व धर्म दिवाकर प. पू. श्री. रमणीकमुनीजी आदि ठाणा ५ च्या शुभहस्ते डिरेक्टरी प्रकाशित करण्यात आली.

यावेळी सोबत आदिनाथ संघाचे अध्यक्ष श्री. संजयजी सांकला, श्री. अनिलजी नहार व अविष्कार ग्रुपचे प्रितम बेताळा, निकीता चोरबोले, कल्याणी गेलडा, शुभम संचेती इ. अविष्कार ग्रुपचे युवा, युवती सदस्य

❖ **श्री. महेंद्र सुंदेचा मुथा, पुणे**

पुणे येथील युवा कार्यकर्ते श्री. महेंद्रजी सुंदेचा मुथ्था यांनी आपल्या मातोश्री स्व. चंचलबाई व पिताश्री स्व. माणिकचंदजी यांच्या स्मरणार्थ पुण्यातील लाईफ पॉईंट मल्टिस्पेशालिटी हॉस्पिटल, वाकड पुणे यांना अम्बुलन्स भेट दिला. वर्धमान पुरा येथे झालेल्या कार्यक्रमात श्री. माणिकशेठ दुगड, श्री. प्रकाश बोरा, श्री. ललीत शिंगवी, श्री. रविंद्र चोरडिया, नितीन चोपडा, श्री. महेंद्रजी सुंदेचा मुथा इ. अनेक मान्यवर उपस्थित होते.

❖ **दि पूना मर्चंटस् चेंबर, पुणे**

दि. पूना मर्चंटस् चेंबर, पुणे तर्फे दरवर्षी रास्त दरात लाडू-चिवडयाची विक्री केली जाते. यावर्षी विक्री स्टॉलचा शुभारंभ करताना पोलीस आयुक्त श्री. के. के. पाठक साहेब, चेंबरचे अध्यक्ष श्री. प्रवीणजी चोरबेले, श्री. वालचंदजी संचेती, श्री. जवाहरजी बोथरा, श्री. पोपटशेठ ओस्तवाल, श्री. राजेंद्रजी बांठीया, श्री. अशोक लोढा इ. व्यापारी बंधू

❖ **श्री. श्रीपालजी ललवाणी, पुणे –एकसष्ठी**

पुणे येथील सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. श्रीपालजी ललवाणी यांची एकसष्ठी पुण्यात आगळ्या वेगळ्या कार्यक्रमात साजरी केली. यावेळी श्री. श्रीपालजी ललवाणी यांच्या लेखाचे संकलन असलेल्या पुस्तकाचे अनावरण कार्यक्रमाच्या अध्यक्षा ॲड. मुक्ता दाभोलकर व प्रमुख पाहुणे बीजेएसचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. प्रफुल्लजी पारख यांच्या हस्ते करण्यात आले. सोबत श्री. श्रीपालजी, सौ. ललवाणी इ.

❖ **श्री. अमृतलालजी मुथा – अमृत महोत्सव**

अहमदनगर येथील प्रसिद्ध कर सल्लागार श्री. अमृतलालजी प्रेमराजजी मुथा यांचा अमृत महोत्सव १५ नोव्हेंबर रोजी महावीर प्रतिष्ठाण पुणे येथे साजरा करण्यात आला. वयाच्या ७५ व्या वर्षात पदार्पण करीत असताना त्यांच्या धर्मपत्नी सौ. गुलाबबाई मुथा यांच्या बरोबरच्या सहजीवनासही नुकतीच ५१ वर्षे पूर्ण झाली आहेत. त्यामुळे सुवर्णमयी अमृत महोत्सव असा दुहेरी योग या कार्यक्रमाच्या निमित्ताने आला. यावेळी सोबत डॉ. अभय मुथा, श्री. अजय मुथा, श्री. आशिष मुथा व मुथा परिवार

❖ **सो ॲण्ड सो रेडिमेडस्, अहमदनगर – उद्घाटन**

अहमदनगर, इमारत कंपनी येथील 'सौ ॲण्ड सो रेडिमेडस्' वस्त्र दालनानंतर शहाजी रोड, घासगली येथील दुसऱ्या नूतन शोरूमचे उद्घाटन स्वीट होमचे संचालक श्री. किरणशेठ बोगावत यांच्या हस्ते संपन्न झाले. यावेळी सोबत सो ॲण्ड सो रेडिमेड्चे संचालक श्री. कुंतीलालजी, कल्पेश व केतन मुथा व अनेक मान्यवरांनी उपस्थित राहून शुभेच्छा दिल्या. ●

महाराष्ट्रातील जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वात खात्रीशीर, सर्वात सोपा व सर्वात स्वस्त मार्ग...

जैन जागृति